

## उत्तररामचरितम् भवभूति की नाट्यकला



मंजू यादव

शोध छात्रा, संस्कृत विभाग,  
राम अवध यादव गन्ना कृषक स्नातकोत्तर,  
महाविद्यालय ताखा शाहगंज जौनपुर, |  
बीर बहादुर सिंह पूर्वाचल विश्वविद्यालय, जौनपुर,  
उत्तर प्रदेश, भारत।

भवभूति के नाटकों की नाट्यकला से समीक्षा करने पर वे उन्नत कोटि के ठहरते हैं, नाट्यकला के अन्तर्गत नाटक के सभी तत्व आ जाते हैं, यथा—कथानक, पात्र, अन्वितियाँ, कथोपकथन आदि जहाँ तक कथानक का प्रश्न है, भवभूति का क्षेत्र सीमित, है— दो नाटकों की कथावस्तु श्रीरामचन्द्र के आख्यान से सम्बद्ध है, और मालतीमाघव की प्रणयकथा लोकवृत्त पर आधारित है। रामचरित पर आधृत नाटकों की कथावस्तु के विन्यास में भवभूति को प्रचलित परम्परा का पालन आवश्यक था। परम्परा के पालन के साथ—साथ भवभूति ने उचित मौलिकता का भी सन्निवेश किया है उत्तररामचरित के अन्त में सीता राम का मिलन भी नवीनोद्भावना ही हैं। इसका उद्देश्य नाटक को सुखान्त बनाना है।

भवभूति के नाटकों के पात्र भी बड़ी कुशलता से निर्मित है। पात्रों के प्रकार भी बहुत से है। अत्यन्त क्रोधी, अत्यन्त शान्त कापालिका, बौद्ध भिक्षुणी, इत्यादि बहुत प्रकार के पात्र इन नाटकों में है। नाटक की मुख्य शक्ति उसके पात्रों पर निहित रहती हैं पात्रों के चरित्रांकन में भवभूति ने सफलता प्राप्त की है। उत्तररामचरितम् के मुख्य पात्र राम, सीता, वासन्ती, जनक, तमसा, कौशल्या, लव—कुश चन्द्रकेतु आदि हैं। इस नाटक के सभी पात्र चाहे उस नाटक में उनका महत्व कितना भी छोटा क्या न हों अपने रूप में पूर्ण हैं साथ ही आदर्श प्राणी भी हैं। एक ओर लोकाराधन के कारण सीता का त्याग करने से भी वे विरत नहीं होते तो वे दूसरी ओर आदर्श धर्मपत्नी का त्याग कर वे पुरुषाक की भाँति भीतर ही भीतर जलने भी लगते हैं।

भवभूति के संवादों का भी अपना विशेष महत्व है, भवभूति के पात्र प्रायेण भावुक होते हैं। अतः अपने भावों को वे खुलकर व्यक्त करते हैं।

भवभूति भाषा के प्रकाण्ड विद्वान हैं, वश्यवाक कवि हैं। जैसे भाव का चित्रण करना है, भाषा उसी के अनुरूप होती है। भाषा की सरलता के विषय में उनका कोई आग्रह नहीं। विलष्ट, शिलष्ट तथा समस्त भाषा का प्रयोग भवभूति की रचनाओं में बहुलता से प्राप्त होता है। अपितु वह सदैव विषय और भाव की व्यंजना में समर्थ हैं।

भवभूति का 'उत्तररामचरित' उनकी नाट्यप्रतिभा को प्रकट करने वाला सर्वोच्च नाटक है। भवभूति स्वभाव से ही गम्भीर प्रकृति के कवि हैं। जिन्हें अपनी अनुभूति से संसार में विषाद तथा वेदना का अधिक

संचार दृष्टिगोचर होता है। फलतः वे भाव प्रवण कवि हैं और इस भाव प्रवणता का प्रभाव उनके नाटकों पर 'विशेषत' उत्तररामचरित पर अधिकता से पड़ रहा है। भावों के स्निधि चित्रण के कारण यदि उत्तररामचरित गीति-नाटक (लिरिक ड्रामा) है, तो प्रकृति तथा युद्ध के वर्णनों के विन्यास के कारण यह 'एपिक ड्रामा' भी कहा जा सकता है। घटनाओं की योजना में मालती-माधव का दश अंक वाला प्रकरण कुछ अव्यवस्थित तथा दुर्व्यवस्थित भले ही दिखाई पड़े, परन्तु राम-सम्बंधी दोनों नाटकों में घटना-शैयित्य का सर्वथा अभाव है। उत्तररामचरित में घटना का संविधान बड़े ही मनोवैज्ञानिक पद्धति पर प्रदर्शित किया गया है। आरम्भ में चित्रदर्शन की योजना बड़ी फलप्रद सिद्ध होती है। राम जैसे एक पत्नी व्रतधारी पति सीता जैसी सती का पूर्ण गर्भावस्था की स्थिति में परित्याग कर देते हैं, घटना को स्वाभाविक रीति से सम्भाव्य बनाने के लिए ही भवभूति ने चित्रदर्शन की कल्पना की है जो कालिदास के संकेत के ही ऊपर आधारित है, परन्तु भवभूति ने इसका पूर्ण नाटकीय साफल्य दिखलाया है। जंगल के पूर्वानुभूत दृश्यों को देखकर सीता के हृदय में उन्हें पुनः देखने की नैसर्गिक अभिलाषा उदित होती है। वह राम से निवेदन करती हैं और राम को अपनी ओर से कठोर व्यवहार का आभास भी दिखलाना नहीं पड़ता वह सीता के दोहद की पूर्ति के साथ ही साथ एक बड़े आवश्यक कार्य का नैसर्गिक ढंग से सम्पादन कर देते हैं। इतना ही नहीं गंगा और पृथ्वी देवी की सीता के लिए शिवानुध्यान परायण होने की प्रार्थना जृम्भकारस्त्र, के प्रदर्शन से लव-कुश के रामपुत्र होने की पहचान आदि घटनाओं, का उद्देश्य चित्रदर्शन के द्वारा भली-भाँति पृथ्वी देवी की सीता के लिए शिवानुध्यान परायण होने की प्रार्थना जृम्भकास्त्र, के प्रदर्शन से लव-कुश के रामपुत्र होने की पहचान आदि घटनाओं, का उद्देश्य चित्रदर्शन के द्वारा भली-भाँति सिद्ध होता है।

भवभूति एक सिद्धहस्त नाटककार है। अपनी गम्भीर प्रकृति के अनुरूप ही उन्होंने राम और सीता जैसे परम पावन आदर्श चरित्र पात्रों को अपने नाटक के लिए चुना है। भवभूति ने बाल्मीकि के आदिकाव्य का गम्भीर अनुशीलन किया था और इससे उन्होंने मूर्त पदार्थों की अमूर्त से तुलना, करुणा रस की सर्वापरि तथा सर्वमान्य स्थिति आदि अनेक तथ्यों को अंगीकार किया है। राम का चरित्र बड़ा ही उदात्त आदर्श तथा प्रख्यात परम्परा के सर्वथा अनुरूप है। 'रामराज्य' का आदर्श रूप अपने वैभव के साथ यहाँ दीख पड़ता है। राम आदर्श राजा है। उनका व्रत ही 'प्रकृतिरंजन' है। यहाँ तक की पवित्र चरित्रा जनक नन्दिनी को भी छोड़ते हुए राम को व्यथा नहीं है—

**स्नेहं दया च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि ।  
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति में व्यथा ॥**

यह पवित्र उद्गार जिस राजा के मुख से स्वतः निकलता है, उसके चरित्र की पावनता का महात्म्य किन शब्दों में वर्णित किया जा सकता है? वे जानकी के सच्चे चरित्र से परिचित न हों ऐसी बात नहीं है, परन्तु लोकाराधन की वेदी पर अपने निजी सौख्य को तिलांजली देना राम की कर्तव्यनिष्ठता का आदर्श भूपतित्व का उज्ज्वल दृष्टान्त है। तृतीय अंक में राम वासन्ती के सामने अपने सच्चे भावों को प्रकट करने से पराड़-मुख नहीं होते, वे 'लोक' की निन्दा भरपेट करते हैं। 'लोक' के अस्त-व्यस्त अमर्यादित स्वरूप से वे भली-भाँति परिचित हैं, परन्तु फिर भी अपनी कर्तव्यनिष्ठा 'लोक' के अनुरंजनार्थ प्रियतम वस्तु का परित्याग करने के लिए बाध्य करती है। सीता पीड़िता नारी का प्रतीक है। वह राम के द्वारा कठोर गर्भावस्था में परित्यक्ता होने पर भी अपने पति के लिए एक शब्द भी प्रतिवाद के रूप में नहीं कहती राम के भावसंघर्ष को वह भली भाँति पहचानती है। एक ओर राम अपने निजी जीवन के लिए व्यस्त है और दूसरी ओर

प्रजानुरंजन उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करता है, भावो के इस संघर्ष के कारण राम का हृदय से दुखित नहीं है, प्रत्युत राम की विषम दशा के चिन्तन से चिन्तित है। ऐसे पतिव्रता का वर्णन मिलना नितान्त दुर्लभ है। राम की मूर्छा देखकर वह स्वयं संज्ञाहीन हो जाती है और अनेक उपायों के द्वारा वह चेतन दशा में आती हैं राम और सीता का यह आदर्श चित्रण भवभूति की नाट्य कला का चरम अवसान है। भवभूति के नाटकों में विदूषक का अभाव है। परन्तु इनके सुनियन्त्रित प्रणय प्रसंग में विदूषक जैसे ओछे पात्र की मध्यस्थता करने की आवश्यकता ही नहीं होती हमारे कवि ने राम और सीता उदात्त चरित्र को अपने नाटकों का आधार पीठ बनाया है जिनके जीवन को मर्यादित प्रणय की प्रभा फूटकर स्निग्ध तथा आलोकित किया करती है। ऐसी दशा में यदि विदूषक का प्रयोग जानबूझ कर नहीं किया गया तो कोई हानि या त्रुटि नहीं भवभूति को हास्य से एकदम कोरा मानना भी उचित नहीं होगा।

अपनें तीनों रूपकों की अपेक्षा उत्तररामचरित में भवभूति को नाट्य तथा कवित्व दोनों के उत्कर्ष की अधिक प्राप्ति हुई है। जैसे कालिदास को अभिज्ञानशाकुन्तल के कारण नाट्य जगत में उत्कृष्ट माना जाता है वैसे ही भवभूति इस नाटक के सन्दर्भ में अमर है—उत्तरे रामचरिते भवभूति विशिष्टस्थिते। इसके भरतवाक्य में उन्होंने कहा है—

**तामेतां परिभावयन्त्वाभिनैर्विन्यस्तरूपां ब्रुधाः  
शब्दब्रह्माविदः कवे; परिणतप्रज्ञस्य वाणीमिमाम् ॥**

तदनुसार शब्द ब्रह्मवेत्ता भवभूति की प्रज्ञा यहाँ परिपक्क है इस नाट्यवाणी की समीक्षा विद्वान लोग करें।

प्रस्तावना में भी ऐसी ही वाग्यवश्यता का उल्लेख उन्होंने किया है—

यं ब्रह्माणमियं देवी वाग् वश्येवानुवर्ततो ।  
उत्तरं रामचरितं तत्प्रणीतं प्रयोक्ष्यते ॥

ऐसे वश्यवाक् कवि भवभूति का उत्तररामचरित करूण कथावस्तु की प्रस्तुति घटनाओं के संयोजन आवश्यकतानुसार प्रकृति—वर्णन मार्मिक चरित्र—चित्रण, सहज ग्राह्य संवाद, मनोभावों की सूक्ष्म अभिव्याकृति, काव्यसौन्दर्य तथा रसों के मनोरम उद्भावन के कारण अद्भूत प्रभाव डालता हैं और यही किसी नाटक की सफलता का रहस्य है। पाश्चात्य तथा पौरस्त्य दोनों प्रकार के समीक्षकों की दृष्टि में यह उत्कृष्ट नाटक है। नाटक के मुख्य रस करूण को अत्यअधिक प्रभावी बनाने के लिए प्रथम अंक में चित्र दर्शन तथा राम की गोद में कलान्त सीता के सो जाने के कथांश जोड़े गये हैं। जो राम चित्र में भी सीता—हरण पर विकल हो जाते हैं। (विरम विरमातः परं न क्षमोऽस्मि, प्रत्यावृतः पुनरपि स में जानकीविप्रयोगः) जो संयोग शृंगार की परमावस्था में जाते हैं। (अयं बाहुः कण्ठे शिशिर मसृणों मौकितकसरः) और दाम्पत्य के दुर्लभ सुयोग का आनन्द लेते हैं (अद्वैत सुखदुःखयोरनुरगतम्) वही अकस्मात् सीता—निर्वासन का दारूण निर्णय लेते हैं और अन्तः पीड़ा से कराह उठते हैं— हन्त विपर्यस्तः सम्प्रति जीवलोकः पर्यवसितमद्य जीवितप्रयोजन रामस्य। शुन्यमधुना जीर्णारण्यं जगत्। असारः संसारः। कष्टप्रायं शरीरम्। अशरणोऽस्मि। किं करोमि, का गतिः। असध्य वेदना की स्थिति में ऐसे ही सहज वाक्य हृदय से फूट सकते हैं। उत्तररामचरितम् में तीन महत्वपूर्ण कल्पानाएँ हैं— चित्रदर्शन छायांक तथा गर्भनाटक। तीनों के पृथक—पृथक नाटकीय महत्व कथा वस्तु के सधन प्रभाव की दृष्टि से हैं चित्रदर्शन का स्थूल उद्देश्य सीता का मनोरंजन करना है जो अपने पिता के लौटने से दुःखी है। इसमें करूण दृश्यों का संकलन है, इसी से भावी सीता—वियोग का संकेत मिलता है।

इस नाटक का छायांक भी भवभूति की मानसी सृष्टि है। इससे सीता के निर्वासन के बाद की घटनाओं का संक्षिप्त परिचय तो मिलता ही है, राम तथा सीता की मनःस्थिति का भी स्पष्ट निरूपण होता है। राम की मनःस्थिति सूत्ररूप में इस प्रकार दी गयी है—

**'अनिर्भित्रो गम्भीरत्वादन्तगूढद्यनव्यथः ।  
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः ॥'**

आगे चलकर राम की प्रलाप, मूर्छा आदि में यह स्फुटतर होती हैं जिससे सीता को आश्वासन मिलता है कि राम उन्हें कितना आदर देते हैं।

पात्रों की दृष्टि से भी यह उत्कृष्ट नाटक है। राम का करुण और प्रजापालक रूप, एकपत्नीव्रत विनय क्षमा उदारता ये गुण हृदयावर्जक हैं। सीता के परित्याग में वे निष्कलुष हैं क्योंकि एक ओर लोकाराधन और दूसरी ओर मन्त्रण का अभाव उनके जीवन को विवश किए हुए हैं सीता की विनम्रता और राम के प्रति अनुपम प्रीति को तृतीय अंक में कवि ने पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया है। वह अपने प्रदीप्त आर्य पुत्र को पुनः जलाने से वासन्ती को रोकती है। इस प्रकार नायक और नायिका की मौन तपस्या दिखाने में कवि की कोई तुलना नहीं है।

नाटक के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात हैं उसकी अभिनेयता नाटक की सबसे बड़ी सफलता उसका अभिनेय होता है। भवभूति के सभी नाटकों का उनके जीवनकाल में ही अभिनय हो चुका था उनके नाटकों का प्रथम प्रदर्शन कालप्रिया नाथ के मन्दिर में हुआ था,

इस प्रकार कहा जा सकता है की भवभूति में एक सच्चे नाटककार की सम्पूर्ण विशेषताये मिलती है। जैसे उर्वरा, कल्पना शक्ति, उदात्त और सुन्दर वस्तु एवं भावनाओं का मूल्यांकन सफल चरित्र चित्रण की अद्भूत क्षमता पात्रों के मन में विभिन्न परिस्थितियों एवं रूपों में होने वाली प्रतिक्रिया का ज्ञान और अद्भूत अनुकूल वर्णन शक्ति, काव्य की गति, लय एवं संगीतात्मक अभिव्यक्ति अपने आर्कषण में अपुर्ण है।

## **सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –**

- |                     |   |
|---------------------|---|
| 1 अभिनवनाट्यशास्त्र | : सीताराम—चतुर्वेदी अखिल भारतीय विक्रम परिषद काशी सं 2008।            |
| 2 कलिदास एवं भवभूति | : डी० एल० राय अनु० रूपनारायण पाण्डेय बम्बई 1956।                      |
| 3 भवभूति के नाटक    | : डा० ब्रज बल्लभ शर्मा।   |
| 4 उत्तरराम चरितय    | : भवभूति डा० कपिलदेव द्विवेदी रामनारायण लाल विजय कुमार इलाहाबाद 1989। |
| 5 उत्तररामचरितम्    | : शारदारञ्जन राय कलकत्ता 1949।  |